AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

विद्यानिवास मिश्र का साहित्यिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. शिप्रा वर्मा
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
डॉ. भीमराव अम्बेड़कर राजकीय महाविद्यालय
अनौंगी, कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने साहित्य को तुलसीदास की ही भाँति लोकमंगल से जोड़ दिया। उन्होंने निबन्धों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के महत्व को उजागर किया। उनके निबन्धों का विषय फलक अत्यन्त विस्तृत है। मिश्र जी ने प्राचीन संस्कृति को हमारी विरासत कहा है। एक तरफ वे भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं और दूसरी ओर लोकजीवन का समन्वय भी उनके साहित्य में दिखायी देता है। मिश्र जी को उनकी साहित्यिक साधना के लिये 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'पद्मश्री', पद्मभूषण', 'विश्वभारती सम्मान' 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' जैसे विशिष्ट सम्मान प्रदान किये गये। मित्र जी के व्यक्तित्व में परम्परा और बौद्धिकता का समावेश दिखायी देता है। उन्होंने न केवल 'साहित्य में आपितु अपने जीवन में भी मानवीय मूल्यों को तरजीह दी। विद्यानिवास मित्र जी महान साहित्यकार एवं संस्कृति प्रेमी व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। मित्र जी ने निवन्धों के अतिरिक्त अनेक पत्र–पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया है। वे एक निबन्धकार, कवि, अनुवादक, समीक्षक के रूप में साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

मुख्य शब्द

मंत्र–जाल, जीवनोन्मुखी, अभिसार, स्वायत्तता, पाश्चात्य.

परिचय

विद्यानिवास मिश्र का जन्म 14 जनवरी 1926 को जिला गोरखपुर ग्राम पकड़डीहा में हुआ था। उनके पिता जी का नाम पं. प्रसिद्व नारायण मिश्र और माता जी का नाम गौरी देवी था। पारिवारिक परम्परा के अनुसार उन्होने शास्त्रों और संस्कृत का अध्ययन किया। बाल्यकाल से ही उन्हे सांस्कृतिक परम्परा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता चला गया जिसका प्रभाव उनके कर्म क्षेत्र पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।

विद्यानिवास जी के निबन्ध लोक संस्कृति के परिचायक है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। मिश्र जी अपने लेखन की प्रेरणा हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को मानते हैं। वे इस संदर्भ में कहते हैं ''निबन्ध कला में मुझे सबसे अधिक प्रेरणा दो फक्कडों से मिली है, वे हैं भैया साहब श्रीनारायण चतुर्वेदी और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।''[1] मिश्र जी के निबन्धों के विषय सामाजिक, सांस्कृतिक, धर्म, राजनीति, कला, लोक जीवन आदि से सम्बंधित रहे हैं। इसी आधार पर उनके निबन्धों का वर्गीकरण एवं उनकी शैलीगत विशेषताओं को बताया जा सकता है।

1. **सामाजिक निबंध:** सर्वप्रथम सामाजिकता से सम्बन्धित निबंधों को लिया जा सकता है। मिश्र जी का समाज

सम्बंधी अनुभव अत्यंत जीवंत है। साहित्य और समाज में अर्न्तसम्बंध होता है। समाज की समस्याओं को अपने निबधों का आधार बनाया है। भारतीय समाज पुरुष प्रधान है किन्तु उन्होने स्त्री को प्रमुख रूप से निबंधों में स्थान दिया है। इस संदर्भ में वे लिखते है ''भारतीय लोक विश्वास में जिसके कन्या नहीं होती, वह दूसरे की कन्या का कन्यादान करके तरना चाहता है। कन्या दो कुलों को तारती है, पुत्र केवल एक कुल को।''[2] मिश्र जी पाठक के हदय को झकझोरते हैं। वे अपने पाठक से सीधा संवाद करते हैं। उन्होंने सामाजिक समस्याओं का केवल चित्रण ही नहीं किया अपितु उसका निराकरण भी किया है। मिश्र जी का मानना है ''आज का हर आदमी, आदमी के फैलाये यंत्र–जाल में इस तरह कैद हो गया है कि वह कैदखाना उसका घर हो गया है। न इसके बिना वह जी सकता है, न चैन पा सकता है।''[3] मिश्र जी की सामाजिक चिन्तनधारा जीवनोन्मुखी है। समाज की विसंगतियों का चित्रण सजगता में करते हैं।

2. **सांस्कृतिक निबंधः** भारतीय संस्कृति मिश्र जी के निबन्धों का आधार है। संस्कृति और साहित्य का घनिष्ठ सम्बंध होता है। वे लिखते हैं ''संस्कृति एक प्रकार की संस्कारात्मक परिणति है।''[4] मिश्र जी के सांस्कृतिक निबंधों के शीर्षक है 'तुम चंदन हम पानी', 'जनमानस में राम', 'नदी,' 'नारी और संस्कृति', 'भारतीय संस्कृति और समन्वय,' 'सांस्कृतिक विकास और पहचान', 'संस्कृति की पाषाणी,' 'कला शक्ति और शिव', 'वैज्ञानिक मनोभाव और मानव संस्कृति', 'भारतीयता की पहचान' आदि। श्री कृष्ण बिहारी मिश्र उनकी सर्जनशीलता के लिये कहते हैं ''सांस्कृतिक–दार्शनिक प्रश्नों पर गंभीर मुद्रा में दृष्टिपात करने वाले संस्कृत यात्री पं. विद्यानिवास मिश्र की सर्जनशील संवेदना धान–पान से गहरे में जुड़ी है''[5] अतः मिश्र जी के निबन्ध सांस्कृतिक चेतना से ओत–प्रोत हैं और जनमानस को उद्वेलित करते हैं।

3. **लोक सांस्कृतिक निबंधः** परम्पराओं लोक–संस्कृति से सम्बंधित निबंध में मिश्र जी समाज की लोक परम्पराओं को भी अपने निबंधों में रखते थे। लोक जीवन के रिवाज, संस्कार उनके साहित्य में मुखरित हुये हैं। 'धान–पान और नीली लपटें', 'गवई गाँव के गोसाई' 'शिवबाबा', 'मेरा गाँव घर', 'आँगन का पंछी', 'गाँव का मन' जैसे निबन्ध लोक जीवन का दर्पण हैं। डॉ. रामदरश मिश्र जी उनके विषय में लिखते है ''आंगन का पंछी निबन्ध का प्रारम्भ वेद या उपनिषद के किसी सूत्र से भी कर सकते थे या इलियट, सार्त्र, काफ्का, मार्क्स किसी भी आधुनिक मसीहा के वाक्य से कर सकते थे किन्तु उन्हें तो इन सबसे अधिक प्रमाणिक गाँव के अनपढ़ लोगों द्वारा व्यक्त किया गया विश्वास लगा।''[6] मिश्र जी के निबंधों में लोक जीवन मुखरित हो उठा है।

4. **धर्म एवं दर्शन सम्बंधी निबंधः** धार्मिक एवं दार्शनिक चिंतन से सम्बंधित निबंधों में विद्यानिवास मिश्र जी का परम्पराओं और मूल्यों में विश्वास दिखाई देता है। धर्म और दर्शन हमारी प्राचीन संस्कृति का प्रतीक हैं। उनके निवन्ध 'धर्म के स्तर पर', 'नये मूल्यों की तलाश' में वे धर्म के उस कल्याणकारी रूप पर प्रकाश डालते हैं जो सर्वत्र मंगलकारी है। मिश्र जी 'प्रात तव द्वार पर' निबंध में लिखते हैं ''मानव न किसी जाति से बड़ा होता है और न किसी सम्प्रदाय से, वह मनुष्यत्व के सच्चे कर्मों और गुनों से ऊँचा होता है।''[7] मिश्र जी के अन्य निबंध 'हिंदू धर्म की नयी पहचान' धर्ममय रथ', 'सम्प्रदायों के बीच की आखिरी समझ', 'धर्म के बुनियादी सरोकार' आदि धर्म के सच्चे रूप की बारीकी से व्याख्या करते हैं।

   उनके दर्शन सम्बंधी निबंध हैं। 'पुरुष की अवधारणा', 'कर्मवाद', 'सा विद्या या विमुक्तये' आदि। 'कर्मवाद' निबंध में मिश्र जी लिखते हैं'' कर्मवाद अपने आप में मनुष्य के जीवन को पूर्णतर बनाने वाला समग्र सिद्धान्त है भारतीय चिन्तन की धारा कर्मवाद के द्वारा ही सम्पूर्ण जीवन को जोड़े हुये है, क्योंकि कर्म का प्रवाह ही जीवन का प्रवाह है।''[8]

5. **यात्रा वृतांत एवं संस्मरणात्मक निबंधः** यात्रावृतांत विषयक निबंध में 'हवाई के साथ मेरा अभिसार', बेतवा के तीर पर', 'रेवा से रीवा', 'यात्रा अभी शुरू नहीं हुयी', 'विदेश में कमरे', 'बागों का शहर लखनऊ' को लिया जा सकता है। ये निबन्ध गहरे शोध और अनुभव का प्रमाण है।

   संस्मरणात्मक निबन्धों में मिश्र जी ने 'हिमालय ने उन्हें बुला लिया', 'हिन्दी के अपराजेय योद्धा', 'देवत्व से बड़ी देवत्व की भावना को प्रणाम' आदि निबन्ध लिखे।

6. **प्रकृति सम्बंधित निबंधः** मिश्र जी ने प्रकृति के माध्यम से अपने कुछ विचारों से साहित्य जगत को अभिभूत किया। इस श्रेणी के निबन्ध कला और विचारों का अनूठा संगम है। 'बसन्त आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं', 'मैंने सिल पहुँचाई', 'आम्र।मंजरी', 'नारियल', 'शेफाली झर रही है' जैसे निबंध उनकी पैनी दृष्टि को दर्शाते हैं। श्री नर्मदाप्रसाद उपाध्याय लिखते हैं ''आचार्य विद्यानिवास मिश्र एक ऐसे ही व्यक्तित्व है जिन्हें देखकर, सुनकर और पढ़कर अनायास धनुषकोटि और रामेश्वरम् की याद आती है। उन्होने महान भारतीय परम्परा में साहित्य और कला के बीच साठ वर्षों की सुदीर्घ यात्रा के बूते पर एक सेतु निर्माण किया।''[9]
7. **भावात्मक निबंधः** मिश्र जी के भावात्मक निबंध उनके हृदय की संवेदनाओं को दर्शाते हैं। इस प्रकार के निबंधों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे पाठक किसी कविता को पढ़ रहा हो। भावात्मक निबंधों में काव्यात्मकता का उदाहरण इस प्रकार है ''जीवन की असली समृद्धि है फूल की तरह हल्का बनना, परिमल–परिपूर्ण बनना, अपने लिये नहीं, पवित्र करने वाले पवन के लिये, तारने वाली नदी के लिये और ऊंचे खिंचने वाले हिमशिखरों के लिये, फूल की तरह झूमना, फूल की तरह हँसना और फूल की तरह ग्रथित होना, मालाकार होना, चढ़ना–उतरना, प्रसाद रूप में बंटना, जहाँ छूना वहाँ गंध बनकर बस जाना''।[10]
8. **हास्य–व्यंग्यात्मक निबंधः** मित्र जी ने यत्र–तत्र हास्य–व्यंग्य के निबन्ध भी लिखे हैं जिस कारण साहित्य में बोझिलता उत्पन्न नहीं होने पाती। 'चिडिया रैन बसेरा', 'भ्रमरानन्द के पत्र', 'भ्रमरानन्द का पचड़ा', 'साहित्य का खुला आकाश', 'दादुर भये वक्ता,' 'चमगादड युग', 'काठ के उल्लू का क्या करें' इसी प्रकार के निबन्ध है। 'काठ का उल्लू' में वे लिखते हैं, ''अपने देश में उल्लू बुद्धि का प्रमाण तो नहीं है। हाँ लक्ष्मी का वाहन है और लक्ष्मी की प्राप्ति में यदि सहायक है तो यह भी मानना चाहिये कि उसमें धन कमाने की बुद्धि तो होगी, विशेषकर उस धन को कमाने की जो काला धन कहा जाता है जो रात के अंधेरे में ही प्रकाश फैलाता है, दिन में वह छिपा रहता है।''[11] मिश्र जी की यह व्यंग्यात्मक शैली पाठकों को बोझिल नहीं होने देती।
9. **विचारात्मक निबंधः** इसी संदर्भ में मिश्र जी के विचारात्मक निबंधों पर भी चर्चा की जा सकती है। मिश्र जी के विचारात्मक निबन्ध उनकी बौद्धिक क्षमता का प्रतीक है। इन निबन्धों की भाषा गम्भीर तथा संस्कृतनिष्ठ है। उनके कुछ विचारात्मक निबन्ध हैं–'भाषा लक्ष्य और लक्षण', 'नये मूल्यों की तलाश', 'धर्म के स्तर पर', 'संस्कृत शिक्षा का स्वरूप,' 'दलदल में फंसी उच्च शिक्षा', 'महाभारत का सत्य', 'भारतीय कला दृष्टि' आदि। मिश्र जी की विचार शैली का एक उदाहरण इस प्रकार है ''परम्परा उषा की तरह एक पुरानी युवती है। हर सूर्योदय में वह नयी होती है, हर दुपहरी में प्रखर होती है, हर संध्या में ध्यान–मग्न होती है, हर चाँदनी में स्वप्न–निष्ठ होती है। वह बिना मरे नया जन्म लेती है।''[12] मिश्र जी के विचारात्मक निबन्ध साहित्य जगत की अमूल्य निधि हैं।

शैलीगत विशेषतायें

मिश्र जी के निबंधों के वर्गीकरण के साथ ही उनके साहित्य की शैलीगत विशेषताओं को बताना भी आवश्यक हो जाता है। उन्होंने वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक आदि विविध शैलियों का प्रयोग निबन्धों में किया है। वर्णनात्मक शैली में किसी विषयवस्तु का वर्णन गहनता से किया जाता है। इस प्रकार के निबन्धों में सहजता है। यथा– ''मेरे गाँव के दक्खिन काली माई का थान था। नीम की घनी ठण्डी छाह में, मिट्टी की दीवारों को बनी छोटी सी कोठरी थी। देवी की कोई मूर्ति नहीं थी। देवी की मूर्ति प्रायः ग्राम–मन्दिरों में नहीं होती। हां हाथी घोडे जरूर रहते हैं वे भी केवल मिट्टी के''।[13] वर्णनात्मक निबंधों में भावना की प्रधानता होती है किन्तु विचारात्मक शैली के निवन्धों में प्रायः बुद्धि तथा विचारों की प्रधानता होती है। 'परम्परा बंधन नहीं', 'अस्मिता के लिये', निबन्ध संग्रह विचारात्मक शैली में लिखे गये हैं। ये निबन्ध मिश्र जी के विचारों का उदात्त रूप है। उनकी विचारात्मक शैली का उदाहरण दृष्टव्य है ''हम में से जो जितना ही भारतीय संस्कृति की बात करता है वह उतना ही भारतीय संस्कृति के भीतर–भीतर उदासीन रहता है और जो जितना ही अधिक पाश्चात्य दृष्टि की तारीफ करता है वह उतना ही आधुनिकता की संवेदना से शून्य रहता है।''[14] भाषा लक्ष्य और लक्षण 'नये मूल्यों की तलाश', 'विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का उद्देश्य', 'तकनीक और आदमी', 'साहित्य इतिहास में दशकवाद जैसे निबन्ध उत्कृष्ट विचारों के द्योतक है।

भावात्मक शैली भावना और संवेदनाओं की अनुभूति होती है। प्रायः इस श्रेणी के निबंध काव्यात्मकता लिये होते हैं। उदाहरणार्थ– ''वह अन्तस्ताल जो विरह–तृषित कलस्विनियों के अश्रुजलों से सिक्त है जो केहनियों के नख में लगे हुये रक्त में अंकित है, जो पृथ्वी के गौरव हिमालय की शिशुता की किलकारियों की स्मृतियों को प्रमुदित है और जो अपने ही समान जूझनेवाली अपनी पड़ोसी प्रकृति और प्रकृति से वर प्राप्त जातियों की विश्रान्ति से एकदम निष्पादित है।''[15]

मिश्र जी की एक अन्य शैली हास्य–व्यंग्यात्यक है जो पाठकों की लिये बोझिल न होकर रोचकता से पूर्ण रहती है। 'प्रभुत्व ज्वर अस्पताल' निबंध में हास्य–व्यंग्य की छटा दिखाई देती है ''मेरे एक रोगी मित्र को हिन्दी से सबसे बड़ी शिकायत यही थी कि और सब तो ठीक है पर 'ऐट–होम' का निमन्त्रण हिन्दी में कैसे छपवाया जाये।''[16]

भाषागत विशेषतायें: शैलीगत अध्ययन के साथ ही मिश्र जी की भाषा पर भी चर्चा की जानी चाहिये। मिश्र जी हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान माने जाते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को तरजीह दी है और अपने विषयों का आधार बनाया है। यही वजह है कि उन्होने संस्कृतनिष्ठ भाषा को प्रमुखता दी है। उनकी भाषा शैली से उनका संस्कृति एवं परम्पराओं के प्रति रुझान का पता चलता है। वस्तुतः उन्हें हिन्दी के अतिरिक्त कुछ अन्य भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त था। 'राष्ट्रभाषा की समस्या', 'भाषा साहित्य और, भाषा विज्ञान का शिक्षण', भाषा, लक्ष्य और लक्षण', 'जयरानी अंग्रेजी' जैसे निबन्ध उनका भाषा प्रेम दर्शाते हैं। मिश्र जी 'जयरानी अंग्रेजी' निबन्ध में लिखते हैं ''अंग्रेजी ने हिन्दी के स्थान का ही।अपहरण नहीं किया है अन्य भारतीय भाषाओं के स्थानों का भी अपहरण किया है। भारत की भावात्मक एकता केवल भारतीय भाषाओं द्वारा ही सम्भव है।''[17] मिश्र जी का भाषा प्रेम इस बात से भी प्रमाणित होता है कि कुछ पुस्तकों का उन्होंने अंग्रेजी में भी अनुवाद किया जिससे हिन्दी साहित्य का सर्वत्र ज्ञान प्रवाहित हो। Modern Hindi Poetry, The Indian Poetic Tradition, Vedic Source of IndianArt जैसी पुस्तकें हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद है।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि आचार्य विद्यानिवास मिश्र जी का साहित्य में अतुलनीय योगदान रहा है। उन्होने समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन जैसे विविध विषयों पर अनेक निबन्ध लिखे हैं। अपनी संस्कृति और परम्परा का सम्मान करने वाले मिश्र जी उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री एवं विद्वान थे। कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित मिश्र जी का साहित्य जगत में अमिट स्थान है। उनकी प्रामाणिक रचनायें आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, विद्यानिवास (1952) *छितवन की छाँह,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 9।
2. मिश्र, विद्यानिवास (1992) *तमाल के झरोखे से,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 67।
3. मिश्र, विद्यानिवास (1976) *कटीले तारों के आर–पार,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 64।
4. मिश्र, विद्यानिवास (1996) *संचारिणी,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 15।
5. स0 शर्मा, कुमुद (2001) *अमृतपुत्र (बनजारा मन की सांस्कृतिक उड़ान),* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 100।
6. स0 शर्मा, कुमुद (2001) *अमृतपुत्र (बनजारा मन की सांस्कृतिक उड़ान),* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 108।
7. मिश्र, विद्यानिवास (1992) *तमाल के झरोखे से,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 64।
8. मिश्र, विद्यानिवास (1995) *भारतीय चिंतन धारा,* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 87।
9. स0 शर्मा, कुमुद (2001) *अमृतपुत्र (बनजारा मन की सांस्कृतिक उड़ान),* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 189।
10. मिश्र, विद्यानिवास (1992) *तमाल के झरोखे से,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 93।

11. मिश्र, विद्यानिवास (2002) *भ्रमरानन्द का पचडा,* ज्ञान गंगा प्रकाशन, चावडी, दिल्ली, पृ. 51।
12. मिश्र, विद्यानिवास (1992) *परम्परा बंधन नहीं,* ज्ञान गंगा प्रकाशन, चावडी, दिल्ली, पृ. 12।
13. मिश्र, विद्यानिवास (1992) *तमाल के झरोखे से,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 60।
14. मिश्र, विद्यानिवास (1981) *परम्परा बंधन नहीं,* राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 76।
15. मिश्र, विद्यानिवास (1989) *मेरे राम का मुकुट भीग रहा है,* मयूर पेपर बैक्स से. 5 नोयडा, पृ. 9।
16. मिश्र, विद्यानिवास (1997) *आंगन का पंछी और बंजारा मन,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 66।
17. मिश्र, विद्यानिवास (1997) *भ्रमरानन्द के पत्र,* प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली, पृ. 80।

——==00==——